इकाई 3 नया आर्थिक समाजशास्त्र*

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 नये आर्थिक समाजशास्त्र का अर्थ

3.3 नये आर्थिक समाजशास्त्र की उत्पत्ति तथा विकास

- 3.3.1 संस्थागत अर्थशास्त्र
- 3.3.2 नया आर्थिक समाजशास्त्र

3.4 अर्थशास्त्र तथा नये आर्थिक समाजशास्त्र में विभिन्न विचारकों का योगदान

- 3.4.1 कार्ल पोलेनी (1886–1964)
- 3.4.2 मार्क ग्रेनोवेटर (1943)
- 3.4.3 पॉल डी मेगिओ (1951)
- 3.4.4 नील फिलिग्सटन (1951)
- 3.4.5 रिचार्ड स्वेदबर्ग (1948)

3.5 आर्थिक जीवन की सामाजिक व सांस्कृतिक निर्भरता : वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य

3.6 सारांश

3.7 संदर्भ

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद समझ सकेंगे :–

- नये आर्थिक समाजशास्त्र का अर्थ;
- आर्थिक समाजशास्त्र संबंधी हाल तक के विकास पर चर्चा;
- समाजशास्त्र से जुड़े विद्वानों का बौद्धिक योगदान, जैसे कार्ल पोलेनी, मार्क ग्रेनोवेटर, पॉल डी मेगिओ, फिलिग्सटन तथा रिचार्ड स्वेदबर्ग।
- नये आर्थिक समाजशास्त्र की अवधारणा की व्याख्या।

3.1 प्रस्तावना

इससे पहले इकाई में आपकी दो महत्वपूर्ण विचारधाराओं – औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद के बारे में पढ़ चुके हैं जो आर्थिक समाजशास्त्र से ही संबंधित हैं। इस इकाई में हम आर्थिक समाजशास्त्र में आए अनेक परिवर्तनों का अध्ययन करेंगे तथा इसमें सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री मार्क ग्रेनोवेटर नील फिलग्सटीन, आर. स्वेदबर्ग आदि का

* डॉ. सूरज बेरी द्वारा लिखित।

क्या योगदान रहा है, यह जानेंगे। आर्थिक जीवन के समाजशास्त्र में हुए विकास के बारे में बताते समय आर्थिक जीवन की सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों पर निर्भरता तथा आर्थिक समाजशास्त्र में नई संभावनाओं के बारे में बताया जायेगा।

3.2 नये आर्थिक समाजशास्त्र का अर्थ

समकालीन आर्थिक जगत तथा इसमें आई नई संभावनाएं सामाजिक अंतर्सम्बंधों का निर्माण करती हैं तथा व्यापक सामाजिक रूझानों द्वारा स्वयं भी नये स्वरूप धारण करती हैं। बाजार तथा संस्थानों के संगठन सामाजिक असमानताओं के आधार कैसे तैयार करते हैं। किस प्रकार उपभोक्तावाद सामाजिक स्वरूप धारण कर लेता है और सामाजिक बहिष्करण की जमीन तैयार करता है। आर्थिक समाजशास्त्री इन प्रश्नों के आधार पर इसके बौद्धिक इतिहास में अपना योगदान देते हैं। आधुनिक युगों के समाजशास्त्री अर्थव्यवस्था में नैटवर्क के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग पर बहुत काम कर चुके हैं। विशेष रूप से अर्थव्यवस्था, आर्थिक संस्थानों के निर्माण तथा आर्थिक जीवन में संस्कृति की भूमिका पर। अर्थशास्त्रियों ने नवीन संस्थात्मक अर्थशास्त्र का विकास किया है इसका उद्देश्य सूक्ष्म अर्थशास्त्र की सहायता से आर्थिक संस्थानों के कार्यों की व्याख्या करना है। दूसरी ओर समाजशास्त्रियों ने आर्थिक समाजशास्त्र का विकास किया है जिसे आर्थिक जीवन का नया समाजशास्त्र कहा जाता है, यद्यपि दोनों नये संस्थागत अर्थशास्त्रों तथा नये आर्थिक जीवन के समाजशास्त्र में कुछ कमजोरियां हैं, फिर भी उन्होंने आर्थिक समाजशास्त्र में नवजीवन का संचार किया है।

नये आर्थिक समाजशास्त्र का उदय एक दशक पहले ही हुआ था, परंतु इसकी जड़ें आरंभिक रूप से 1980 के दशक में देखी जा सकती हैं। विद्वान यह तर्क देते हैं कि नया आर्थिक समाजशास्त्र तब चर्चा में आया जब ग्रेनोवेटर ने निर्भरता की अवधारणा की स्थापना की। अपने महत्वपूर्ण लेख 'इकोनॉमिक एक्शन एण्ड सोशल स्ट्रक्चरः द प्रोब्लम ऑफ एम्बैडिडनैस में, जो नवम्बर 1985 में 'अमेरिकन जरनल ऑफ सोश्योलॉजी' के अंक में प्रकाशित हुआ। इसमें ग्रेनोवेटर ने नये संस्थागत अर्थशास्त्र की सुव्यवस्थित आलोचना की है। उन्होंने आर्थिक जीवन में गैर आर्थिक घटकों की भूमिका पर प्रकाश डाला है। हम देख रहे हैं कि पिछले दो दशकों में आर्थिक समाजशास्त्र में नये–नये गैर आर्थिक घटकों का समावेश हुआ है। जैसे – धन, उद्यमशीलता तथा अर्थव्यवस्था में कानून की भूमिका ग्रेनोवेटर से पहले ही आर्थिक समाजशास्त्र ने विभिन्न दिशाओं में नई अंतर्दृष्टि देखने को मिली थी, इसी सिलसिले में सुप्रसिद्ध विद्वान ग्रेनोवेटर की निर्भरता की अवधारणा सामने आई और नील फ्लिंगस्टीन स्वेदबर्ग के बाजारों पर विचार सामने आये। जब 1980 के दशक के मध्य में आर्थिक समाजशास्त्र को पुनर्जीवित किया गया और इसने सिद्धांत का रूप धारण किया, तब समाजशास्त्रियों को आघात पहुंचा। समाजशास्त्रियों के बीच यह धारणा प्रबल थी कि वे समाजशास्त्र के क्षेत्र में अपने विचारों को प्रधानता देते तथा उनके आधार पर समाजशास्त्र के नये स्वरूपों की व्याख्या करते और उनके द्वारा की गई व्याख्यायें अर्थशास्त्र की मुख्यधारा से अलग होती, परंतु ऐसा कुछ हो नहीं पाया। आर्थिक समाजशास्त्र की विरासत, विशेषरूप से मैक्स वेबर के आर्थिक समाजशास्त्र पर विचार समाजशास्त्रियों के लिये इस दिशा में उपयोगी साबित नहीं हुए क्योंकि उन्हें ठीक से प्रचारित नहीं किया जा सकता।

3.3 नये आर्थिक समाजशास्त्र की उत्पत्ति तथा विकास

अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र के बीच मौजूद व्यापक क्षेत्र में दो ऐसी विचारधाराओं का उदय हुआ जो आर्थिक समाजशास्त्र के लिये विशेष रूप से उपयोगी थीं, और इन दोनों के मिलने से नये आर्थिक समाजशास्त्र का उदय हुआ। इन दो विचारधाराओं के नाम है 'नया संस्थागत अर्थशास्त्र' तथा 'आर्थिक जीवन का नया समाजशास्त्र'।

3.3.1 संस्थागत अर्थशास्त्र

सबसे पहले अर्थशास्त्रियों ने नवीन संस्थागत अर्थशास्त्र का विकास किया था, यद्यपि कुछ समाजशास्त्री भी इस क्षेत्र में काम कर रहे थे। इसमें अंतर्निहित प्रमुख विचार यह था कि सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक संस्थानों की व्याख्या करने में सूक्ष्म अर्थशास्त्र का इस्तेमाल किया जा सकता है। सैद्धांतिक रूप से यह विचार आर्थिक समाजशास्त्र की तुलना में अधिक व्यापक है, परंतु व्यावहारिक स्तर पर यह उस तरह काम नहीं करता। जैसा कि शुम्पीटर ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है – ''आर्थिक समाजशास्त्र संस्थानों का विश्लेषण होता है जिनकी आर्थिक व्यवहार में प्रासंगिकता है। यहाँ यह बात का उल्लेख किया है कि नया संस्थागत अर्थशास्त्र वैबलेन के अमेरिकन संस्थानवाद से मेल नहीं खाता है। बौद्धिक क्रांति के रूप में नये संस्थागत अर्थशास्त्र की जड़ें 1950 के दशक में पायी जाती हैं। यद्यपि 1970 से पहले नया संस्थागत अर्थशास्त्र अस्तित्व में नहीं आ पाया था। 1950 और 1970 के बीच यह विभिन्न वैधानिक, राजनैतिक तथा सामाजिक संस्थानों में अभिव्यक्ति पाता रहा।

1970 में कुछ अर्थशास्त्रियों ने संगठनात्मक व्यवहार के नये सिद्धांतों के बारे में बात करना आरम्भ कर दिया था। सूचना, सौदा तथा कीमतें आदि शब्दावालियों के माध्यम से वे इसका परिचय देने लगे थे। इनमें से हर सिद्धांत थोड़े बहुत अंतर के साथ संगठनों की संचनाओं के उद्‌भव की व्याख्या करता है। संस्थागत सिद्धांत में इस बात पर जोर दिया जाता है कि श्रमिक अर्थशास्त्र पर गणितीय प्रतिमान हावी हो गये थे। इस दौर में जो विचार धारायें सामने आई उनके केन्द्र में सामाजिक संस्थान इतने अधिक नहीं थे जितनी दक्षता की भावना थी। विचारक यह तर्क दिया करते थे कि अर्थशास्त्र व्यवस्था में अथवा अन्य संबंधित क्षेत्र में इसके द्वारा मौजूदा संस्थानों की व्याख्या नहीं की जा सकती जैसे (ग्रेनोवेटर, 1985)। यद्यपि अब भी तथाकथित नये संस्थागत अर्थशास्त्री इस समय संस्थानों का अध्ययन ही कर पा रहे थे, तभी उनका ध्यान निजी प्रयास करने वाले व्यक्तियों की ओर गया है, तब वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संस्थान भी व्यक्तियों की बौद्धिक उपज ही हैं। जब समाजशास्त्री आर्थिक जीवन में औद्योगिक समाजशास्त्रीय विचारधारा से हटकर अनुभववाद में रूचि ले रहे थे, तब कुछ विद्वान कार्ल मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित होकर पूंजीपति और मजदूरों के संबंधों का अध्ययन कर रहे थे।

हेरी ब्रेवरमेन की सुप्रसिद्ध शोध 'लेबर एण्ड मोनोपॉली केपिटल' (1974), माइकेल बुरावॉय की 'मेन्युफेकचरिंग कंसेंट' (1979) तथा मिंट्ज एण्ड श्वार्टज़ (1985) तथा यूसीम (1986), स्टडी ऑफ 'इनर सर्किल' संगठित उद्यम जगत में सामने आए।

इन शोध प्रबंधों में 'समानता की पहेली' पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया था और इन्होंने प्रकार्यवादी समाजशास्त्र द्वारा उत्पन्न गये गतिरोध को हटा दिया था।

पारर्सनस के समाजशास्त्र तथा मार्क्सवाद के पृष्ठ–पट पर 1990 के दशक में आर्थिक समाजशास्त्र का उद्‌भव हुआ जिसने बौद्धिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

3.3.2 नया आर्थिक समाजशास्त्र

नये आर्थिक समाजशास्त्र की उत्पत्ति प्रमुख रूप से अमेरिका में हुई थी और हाल ही में उनका प्रसार यूरोपियन देशों में हुआ है। दूसरी ओर ग्रेनोवेटर का महत्वपूर्ण कार्य यह था कि उसने अर्थशास्त्र की गैरवास्तविक आलोचना का विरोध किया और उसका मूल्यांकन सामाजिक संदर्भ में करने पर जोर दिया। उसने अर्थशास्त्र को सामाजिक संरचना का हिस्सा बताया तथा अपने विश्लेषणों में अर्थशास्त्रियों को इस बात के लिए आढ़े हाथों लिया कि वे अर्थशास्त्र को सामाजिक संदर्भों से अलग रखने का असफल प्रयास करते जा रहे थे।

व्यक्ति की मानव प्रकृति व्यक्तियों को सोच के स्तर पर विशेष रूप से इतना अलग कर देती है कि वे निजी स्तर पर अत्यधिक संकीर्ण फैसले लेने लगते हैं। पारस्परिक निर्भरता की अवधारणा अर्थशास्त्रियों को यह अवसर प्रदान करती है कि वे मुनाफा केंद्रित तथा व्यक्तिपरक सोच का विरोध करें और अर्थशास्त्र को सामाजिक सरोकारों से जोड़े। पूर्व परम्परा के अनुसार पार्सन्स तथा स्मैल्सर मूर आदि ने जिस आर्थिक समाजशास्त्र को जन्म दिया था, वह बहुत महत्वपूर्ण था। ग्रेनोवेटर ने पोलेनी तथा अन्य विद्वानों के विचारों को मिलाकर एक ऐसे आर्थिक समाजशास्त्र की रूपरेखा तैयार की जो पुराने तथा नये आर्थिक समाजशास्त्र की अलग–अलग और स्पष्ट व्याख्या करने में सक्षम था। नये तथा पुराने आर्थिक समाजशास्त्र के बीच एक स्पष्ट अंतर यह था कि नया आर्थिक समाजशास्त्र नवशास्त्रीय विचारकों का खुला विरोध करता था, जबकि पुराना आर्थिक समाजशास्त्र इस मामले में सौम्य था तथा उसने आर्थिक आधार वाले नये वैकल्पिक प्रतिमान गढ़ने का कोई प्रयास नहीं किया था।

अपने अस्तित्व में आने के कोई दस वर्ष बाद आर्थिक जीवन का नया समाजशास्त्र (ग्रेनोवेटर, 1990) जिसे नये आर्थिक समाजशास्त्र के रूप में पहचान लिया था। समकालीन समाजशास्त्र की तीन स्पष्ट परम्पराएं उसके सैद्धांतिक विचारों के रूप में सामने आई – जैसे, नैटवर्क सिद्धांत, संगठनात्मक सिद्धांत तथा सांस्कृतिक सिद्धांत। कार्ल पोलेनी ने पूर्व पूंजीवादी दौर में पारस्परिकता निर्भरता के सिद्धांत पर जोर देते हुए कहा था कि अर्थव्यवस्था समाज का जैविक अंग है। ग्रेनोवेटर इस विचार इसके ठीक विपरीत था। वह यह साबित करना चाहता था कि पूंजीवादी समाज में आर्थिक कार्य सही अर्थों में सामाजिक कार्य ही हैं। वह यह तर्क देता है कि आर्थिक क्रिया–कलाप सामाजिक संबंधों को ठोस प्रणालियों पर आधारित होते हैं। इसीलिए वह नेटवर्क की भूमिका पर जोर देता है। (ग्रेनोवेटर 1985 : 487) मुख्य विचार था कि आर्थिक व्यवहार गैर व्यक्तिगत संबंधों पर आधारित है। अतः नया आर्थिक समाजशास्त्र समाजशास्त्रियों की पहली पीढ़ी द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि को ही आगे बढ़ाता है, मात्र आर्थिक परिदृश्य के सामाजिक हस्तक्षेप की बात नहीं करता है। उसने आर्थिक कार्यों की प्रकृति पर सवाल उठाया है और वैज्ञानिक तर्कसंगतता की कसौटी पर खरा उतरते हुए वह अस्तित्व में आया है।

गतिविधि 1

दस गतिविधियों एवं सामाजिक संस्थानों की सूची बनाईए जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अर्थव्यवस्था से संबंध है। क्या आपको नेटवर्क के संबंधों अथवा एक 'उप–व्यवस्था' के तरीके प्रकट होते हैं।

अपने अनुसंधान पर आधारित एक आलेख तैयार कीजिए और उसे अपने अध्ययन केन्द्र पर दूसरे छात्रों के साथ सांझा कीजिए।

बोध प्रश्न 1

नीचे दिये गये स्थान पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) आर्थिक समाजशास्त्र क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) नया आर्थिक समाजशास्त्र किस प्रकार आर्थिक समाजशास्त्र से भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 अर्थशास्त्र तथा नये आर्थिक समाजशास्त्र में विभिन्न विचारकों का योगदान

पोलेनी द्वारा दिये गये विचारों का निष्कर्ष यह है कि आर्थिक समाजशास्त्र का काम ऐसे उपायो का पता लगाना है जो अर्थशास्त्र की गतिविधियों को नेटवर्क से जोड़ते हैं। कुछ अर्थशास्त्री कहते हैं कि अर्थशास्त्र गतिविधियों बढ़ोतरी के लिए सीधे और छोटे रास्तों पर नहीं चलती है जबकि सच यह है कि वे मौजूदा नेटवर्क की पेचदकियों तथा संस्थागत संदर्भों में रहते हुए काम करते हैं। पोलेनी का विचार था कि औपचारिक लोग बाजारों के माध्यम से तथा बाजारों में किस प्रकार क्या व्यवहार करेंगे यह समझने के लिए औपचारिक विधियाँ काफी हैं। परन्तु ज्यादातर समाजों में इस तरह के संस्थान मौजूद नहीं रहते, ऐसे समाजों में कोई अर्थव्यवस्था की स्वायत्तता की बात नहीं करता; हर कोई अपने स्वयं के विवेक से काम करता है।

3.4.1 कार्ल पोलेनी

इस क्षेत्र में काम करने वाले विद्वानों ने कार्ल पोलेनी के शोध 'द ग्रेट ट्रांस्फार्मेशन' (1957) से दिशा प्राप्त करने का प्रयास किया है। पोलेनी का तर्क था कि बाजारों के

विकास से केवल देश ही प्रभावित नहीं होते अपितु पूंजीवाद बाजारों के चरम अवस्था में पहुँचे पर सामाजिक उथल–पुथल की पूरी संभावना है। पोलेनी ने सुझाव दिया था कि सरकार को स्वयं को बनाये रखने के लिए तथा मजदूरों की सुरक्षा के लिए पूंजीपतियों के समूहों के बीच अंतसंबंधों को बनाये रखने के लिए बाजारों में हस्तक्षेप करना पड़ेगा। जिस तरह से उन्होंने ऐसा किया है, वह आकस्मिक है बाजार–संरचनाओं में अंतर्राष्ट्रीय विविधता की व्याख्या करने में ऐतिहासिक संस्थागत विविधता का योगदान है।

पोलेनी प्रमुख आर्थिक इतिहासकार था जिसने आर्थिक समाजशास्त्र उभरते हुए संकाय के रूप की दिशाओं को निर्धारित किया था। 'द ग्रेट ट्रांस्फोर्मेशन' में पोलेनी अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र के बीच संबंधों पर शोध किया था। इसमें मुख्य रूप से यह बताया गया है कि इंग्लैंड में 19वीं शताब्दी में बिल्कुल नई बाजार केंद्रित समाज की व्याख्या करने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाये गये थे। इसके अनुसार बाजार के बारे में सब केवल बाजार ही तय करेगा, किसी अन्य बाहरी व घटक की इसमें दखल देने का अधिकार नहीं होगा। राजनैतिक ताकतों/सरकारों से कीमत तय करने का अधिकार लेकर बाजार को दे दिया जायेगा। बाजार सौम्य या उग्र सामाजिक संस्थानों में अपना स्थान बनाने के लिए सौम्य या उग्र तरीके अपनाने के लिए स्वतंत्र होगा। पोलेनी के विचार में अंततः यह स्थिति ठीक साबित नहीं होगी, इससे इतनी उठापटक की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी कि सब कुछ अस्त–व्यस्त हो सकता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब बाजारों के सुधारों के नकारात्मक प्रभाव दिखाई देने लगे तो उनको नियंत्रित करने के लिए अनेक कदम उठाने पड़े। इनसे समाज में संतुलन और बिगड़ा। 20वीं शताब्दी में यूरोप में जो फासीवाद उभर कर आया और भीषण युद्धों का कारण बना, वह इंग्लैंड द्वारा 19वीं शताब्दी के मध्य में सब कुछ बाजार के हवाले कर देने का ही दुष्परिणाम था।

पोलेनी का सबसे महत्वपूर्ण विचार पारस्परिक निर्भरता का है, जो उसके समकालीन विचारकों की सोच से बिल्कुल अलग था। पोलेनी के अनुसार जब आर्थिक गतिविधियाँ पारस्परिक निर्भरता के सिद्धांत से हट जाती है या सामाजिक अथवा गैर–आर्थिक ताकतों के नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं, तो वे विनाशकारी परिणाम लाती है।

पूंजीवाद के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था पर समाज का नियंत्रण नहीं रहता अपितु इसके ठीक उलट समाज पर अर्थव्यवस्था का नियंत्रण हो जाता है। आर्थिक प्रणाली सामाजिक संबंधों पर निर्भर नहीं रहती अपितु सामाजिक संबंध आर्थिक प्रणाली पर निर्भर हो जाते हैं। पोलेनी का कार्य नयी सामाजिक क्रांति को समझने की नई दृष्टि भी प्रदान करता है। आर्थिक समाजशास्त्र के अन्य विचारात्मक उपकरण पोलेनी के एकीकरण के रूप हैं। उसका सामान्य तर्क यह है कि तर्क आधारित आत्महित जब मनुष्यों के मन में रहता है तब ऐसे मनुष्य समाज की आधारशिला नहीं रख सकते। अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो लगातार भौतिक स्थायित्व प्रदान करती रहे। एकीकरण के तीन रूप या तरीके होते हैं जो अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करते हैं तथा एकीकृत करते हैं। ये है :–

i) पारस्परिकता – यह एक जैसे समूहों के बीच होती है, जैसे परिवार, नातेदारी के समूह तथा आस–पड़ोस।

ii) पुनर्वितरण – इसके माध्यम से उत्पाद या वस्तुएँ समुदाय के केंद्रीय स्थल से निकालकर लोगों तक पहुँचाइ जाती है, जैसे राज्य तथा

iii) विनिमय – इनमें वस्तुएँ बाजार की सहायता से कीमत पर प्रदान की जाती हैं।

3.4.2 मार्क ग्रेनोवेटर (1943–)

मार्क ग्रेनोवेटर ने मुख्यतः इसकी व्याख्या की है कि लोग, सामाजिक परिदृश्य तथा सामाजिक संस्थान किस प्रकार सम्पर्क में आते हैं तथा एक दूसरे को कैसे स्वरूप प्रदान करते है। ग्रेनोवेटर का तर्क था कि अर्थशास्त्रियों का यह विचार कि मौजूदा आर्थिक संस्थान अस्तित्व में आये हैं क्योंकि वे जिस अत्यधिक प्रभावशाली समाधान का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह ठीक नहीं है। ग्रेनोवेटर के अनुसार अर्थशास्त्रियों की यह सोच सामाजिक ऐतिहासिक व वैधानिक संदर्भों में संस्थानों की भूमिका से इनकार करते हैं।

इतना ही नहीं, नये आर्थिक संस्थानीकरण की क्षमता पर जोर देना सामाजिक संरचना के विस्तृत विश्लेषण को हतोत्साहित करता है। ग्रेनोवेटर का आर्थिक निर्भरता पर सुप्रसिद्ध लेख नये आर्थिक समाजशास्त्र का घोषणापत्र माना जाता है। जैसा कि पहले बताया गया है ग्रेनोवेटर का प्रभावी दृष्टिकोण 1980 के दशक से सामने आया था। उसने पुराने आर्थिक समाजशास्त्र को पार्सनस तथा स्मैल्सर के अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक दृष्टिकोण से जोड़ा था। ग्रेनोवेटर के अनुसार नये आर्थिक समाजशास्त्र का जन्म अर्थशास्त्र के नवशास्त्रीय आर्थिक विचारों की सूक्ष्म समीक्षा से हुआ था। उसकी निर्भरता की अवधारणा अंतर्मानवीय संबंधों के परिदृश्यों की भूमिका पर जोर देती है। यह अवधारणा उसे नितांत निजी प्रतिक्रियाओं की आलोचना तक ले जाती है। (जैसा कि अर्थशास्त्र में कहा गया है) तथा मानवीय कृत्यों का अति समाजीकरण करती है। (जैसा कि शास्त्रीय समाजशास्त्रियों के संरचनात्मक लेखों में तर्क दिया गया है।) इसी प्रकार, मार्क ग्रेनोवेटर के 'गैटिंग ए जॉब' (1975) में नेटवर्क बाजार का एक सफल अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं। इसमें आर्थिक समाजशास्त्र की भी अनुकरणीय व्याख्या की गई है। ग्रेनोवेटर का यह शोध कार्य नई दृष्टि प्रदान करता है, इसमें तथ्यों का अध्ययन सर्तकतपूर्वक किया गया है, तथा समुचित व स्पष्ट विश्लेषण देखने को मिलते हैं। इस शोध प्रबंध को पढ़ने से पता लगता है कि इसमें उन सामाजिक तरीकों का विश्लेषण किया गया है जिनसे लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। वोस्टन के उप–नगर न्यूटन में श्रमिकों की व्यावसायिक प्रौद्योगिक एवं प्रबंधमूलक प्रवृत्तियों का विशद अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें लगभग 280 लोगों ने भाग लिया था, उन्हें जो प्रश्न दिये गये थे उनके उत्तर उन्होंने विस्तारपूर्वक लिखे हैं। इनमें से सौ व्यक्तियों का साक्षात्कार भी किया गया है। अधिकतर प्रश्न नये रोजगार प्रान्त करने संबंधी सूचना स्रोतों पर आधारित हैं। जो प्रश्न पूछे गये हैं उनमें अर्थशास्त्रियों के अनुसार श्रमिक बाजार को एक ऐसे स्थान के रूप में प्रदर्शित किया गया है जहाँ से रोजगार संबंधी सूचनायें सभी लोगों तक पहुंचती हैं। और जो व्यक्ति रोजगार प्राप्त करता है वो रोजगार के अवसर को तलाशने की प्रक्रिया में संलग्न रहने के बाद ही ऐसा कर पाता हैं। रोजगार की तलाश वह अधिकतम उपयुक्तता के सिद्धांतों के आधार पर करता है। ग्रेनोवेटर का निष्कर्ष यह है कि उतिच श्रम बाजार केवल किताबों में ही होते हैं। रोजगार प्राप्त करने के तर्क के बारे में किताबों को जो कुछ बताया जाता है, रोजगार प्राप्त करने की प्रक्रिया व्यावहारिक रूप से इतनी सही नहीं होती है (ग्रेनोवेटर, 1974)।

ग्रेनोवेटर के अनुसार नये आर्थिक समाजशास्त्र की नवीनता यह है कि आधुनिक समय में रोजगार तलाशने वाले लोग बाजारों, व्यापारिक–घरानों तथा संस्थानों के बारे में ठीक से जानकारी प्राप्त नहीं करते तथा वे आर्थिक विचारों की परिकल्पना को भी हल्के से लेते हैं, जिस पहली पीढ़ी के समाजशास्त्री ने व्यापक रूप से स्वीकार किया था। यद्यपि संगठनात्मक सिद्धांतों ने औद्योगिक नियंत्रण तथा पूंजीबाजार के कार्यों की तर्कसंगतता पर जोर दिया है, परन्तु उन्होंने व्यापक सामाजिक संरचनाओं एवं संदर्भों के मंदी, बेरोजगार तथा विकास पद्धतियों पर पड़ने वाले प्रभावों का समुचित विश्लेषण नहीं किया है। निर्भरता की अवधारणा मनुष्यों के अंतर्संबंधों की भूमिका पर विशेष जोर देती है तथा यह भी बताती है कि उनके द्वारा तैयार किये गये नेटवर्क लोगों में विश्वास पैदा करते हैं। जबकि अर्थशास्त्री भविष्य में होने वाले लेन–देन की निरंतरता पर विशेष रूप से जोर देते हैं और यह मानकर चलते हैं कि यह ही विश्वनीय संबंधों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ग्रेनोवेटर ने इस बात पर जोर दिया था कि इसमें भाग लेने वाले लोगों के पहले के संबंधों तथा विशिष्टताओं को शामिल नहीं किया गया है। अतः व्यक्तियों के आर्थिक जीवन में विश्वास पैदा करने का काम सामाजिक संबंध ही करते हैं, संस्थागत तथा संगठनात्मक व्यवस्थायें नहीं करती। दूसरे शब्दों में यह तर्क दिया जाता है कि अज्ञात बाजार तथा बेनामी व्यापारिक संस्थान जिनकी चर्चा नव शास्त्रीय आर्थिक प्रतिमानों में की गई है, वे वास्तविक आर्थिक जीवन में अस्तित्व नहीं रखते और अंततः सभी प्रकार के लेन–देन सामाजिक संबंधों द्वारा सृजित होने वाली विश्वसनीयता के आधार पर ही चलते हैं। उदाहरण के लिये नेटवर्क का विश्लेषण विभिन्न प्रकार के आर्थिक संपर्कों का पता लगाने के लिये किया जाता है। परन्तु इसे किसी प्रथा अथवा संगठन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

3.4.3 पॉल डी मैगियो (1951)

आर्थिक समाजशास्त्र अर्थव्यवस्था में संगठनात्मक समाजशास्त्रियों के साथ व्यापारिक संगठनों के सामान्य सरोकार सांस्कृतिक समाजशास्त्रियों के साथ संस्कृति तथा मूल्यों की भूमिका को साझा करती है। पॉल डी मैगियो आर्थिक परिदृश्य की हर व्याख्या में संस्कृति को शामिल नहीं करता। आर्थिक समाजशास्त्री भी अपने कार्यों में नेटवर्क के इस्तेमाल को पूरी तरह सौहार्दपूर्ण नहीं मानते। 1983 में पॉल डी मैगियो तथा वाल्टर पोवैल इस विचार पर काम किया कि ऐसे नेटवर्क को पकड़ा जाये जिनके द्वारा नयी तार्किक प्रथायें विभिन्न संगठना में विसरित होती है – जैसे राजनैतिक नेटवर्क, व्यावसायिक नेटवर्क तथा व्यापारिक निकायों के नेटवर्क। विभिन्न विचारधाराएं एक दूसरे से काफी मिलती–जुलती होती हैं। इसी प्रकार अस्पताल, वाहनों के कारखाने तथा सहायातार्थ संस्थान भी आपस में मिलते जुलते से होते हैं। हर क्षेत्र में करते–करते सीखने और फिर बेहतर काम करने की संभावना बनी रहती है।

डी मैगियो तथा लाउच (1998) संस्थानीकरण के पीछे की संचालन शक्ति की व्याख्या कार बनाने वाले कारखानों के सामाजिक प्रबंधकों से की है जो स्वतंत्र रूप से अपने कार्य को आगे नहीं बढ़ाते अपितु अग्रणी संस्थानों से सीखकर अपने कार्यों की आगे बढ़ाते है। डी मैगियो आर्थिक मामलों में सांस्कृतिक विश्लेषण का प्रमुख समर्थक था। उसने सामाजिक सांस्कृतिक स्थितियों को उन उपभोक्ताओं के संदर्भ में समझने का प्रयास किया है जो गैर बाजारीय संबंधों से जुड़े होते हैं। जिन लोगों से उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध नहीं होते उनकी विश्वसनीयता की परख करने के लिए वे

सामाजिक संबंधों का सहारा लेते हैं। इस प्रतिमान को 'आधारितता की खोज' कहा जाता है। (डी मैगियो व लाउच, 1998) वैकल्पिक रूप से कार्यरत लोग ऐसे लोगों को व्यापार के लिए चुन सकते हैं जिनके साथ उनके पहले से ही गैर–व्यावसायिक संबंध होते हैं। यह तरीका अपने जाने–पहचाने क्षेत्र के अंतर्गत आदान–प्रदान पर आधारित होता है। दूसरे शब्दों में उसका काम विभिन्न उपभोक्ता बाजारों में मौजूद विभिन्न नेटवर्क की भूमिकाओं की पहचान करना और उनकी व्याख्या करना है तथा विभिन्न प्रकार के बाजारों के सामाजिक संगठनों का पता लगाना है। इस प्रकार के संबंध असंतुष्टि के अनुपात को कम करते हैं, अदृश्य खतरों से बचाते हैं तथा अनिश्चयता से मुक्ति दिलाते हैं। इसके अलावा व्यक्तिगत उपभोक्ता संबंधों की नेटवर्क का इस्तेमाल उसी करते हैं, जैसे व्यापारिक निकाय संगठनात्मक तारतम्यों का इस्तेमाल करते हैं।

उसके काम ने आर्थिक समाजशास्त्र में अनुसंधान की संभावनाओं के नये क्षेत्रों का द्वार खोल दिया था। उदाहरण के लिए राज्य तथा शासन के औपचारिक संस्थानों के अंतर्गत अनौपचारिक संबंधों का पता लगाने में समकालीन दौर में सम्पर्क के दायरों में काम करने की नई अंर्तदृष्टि प्राप्त होती है।

3.4.4 नील फ्लिगस्टीन (1951)

फ्लिगस्टीन ने व्यापारिक निकायों तथा बाजारों के अध्ययन को व्यापकतर कार्यक्षेत्र के रूप में अपनाया तथा संस्थागत, सांस्कृतिक अथवा ऐतिहासिक प्रवृत्तियों का हिस्सा मानकर उनके अध्ययन पर जोर दिया। उसके अनुसार जब सहयोग या अनुपालन गैर–व्यक्तिगत संबंधों तथा उनकी पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है तो यह उन सामाजिक अंतसंबंधों पर भी निर्भर करता है जिनमें लोग शामिल होते हैं। इस प्रकार दो कार्यवत घटकों या व्यक्तियों के पहले से मौजूद संबंध आंशिक रूप से यह तय करते हैं कि वे एक दूसरे को धोखा देंगे या नहीं देंगे, समूचे कार्यक्षेत्र के बारे में सही सच है जिसमें वे दोनों भी शामिल है। निष्कर्षतः आधुनिक बाजारों की एक बड़ी विशेषता यह है कि वह स्थायित्व पर जोर देता है (फ्लिगस्टीन, 1996, 2001)। इस दृष्टिकोण के अनुसार कार्यरत व्यक्ति अस्थिर आर्थिक वातावरण पसंद नहीं करते अपितु वे स्थायी बाजारों के समर्थक हैं। अमेरिका में बड़े निगमों के मालिकों के काम करने के तरीकों के अध्ययन में फ्लिगस्टीन तर्क करता है कि मालिकी और बैंकों के संबंधों की मौजूदगी बड़े व्यापारिक निकायों की नीतिगत तथा वित्तीय परिणामों का निश्चयन नहीं करते। अमेरिका के न्यापारिक निकायों की नीतिगत तथा वित्तीय परिणामों का निश्चयन नहीं करते। अमेरिका के व्यापारिक निकायों के अध्ययन का आधार के बारे में नील फ्लिगस्टीन ने 'द ट्रांस्फोर्मेशन ऑफ कॉर्पोरेट कंट्रोल' (1990) में स्वामित्व की आर्थिक समाजशास्त्र की अंतर्दृष्टि का वर्णन किया है। फ्लिगस्टीन के अनुसार मुख्य अमेरिकन व्यापारिक निकायों की रणनीतियाँ उनके नियंत्रण की अवधारणा से तय होती है, गैर–वैयक्तिक कार्य–क्षेत्रों से नहीं। वह ग्रेनोवेटर तथा अन्य विचारकों की आधारितता की अवधारणा की आलोचना करता है तथा संस्थान के अंतर्गत बनने वाले संबंधों की ताकत की भूमिका को महत्व देता है। व्यापारिक निकायों के आधुनिकतम सामाजिक अनुसंधानों पर नजर डाले तो स्पष्ट दिखता है कि बाजारों तथा सरकारों की संचालन–शक्तियों विशेष रूप से गतिशील हुई हैं। अंततः फ्लिगस्टीन ने कम्पनियों के संगठनों तथा उनकी कार्यप्रणालियों का अध्ययन करने वाले आर्थिक समाजशास्त्रियों के संगठनात्मक सिद्धांत तथा महत्वपूर्ण नीतियों को रेखांकित किया है।

3.4.5 रिचार्ड स्वेदबर्ग (1948)

रिचार्ड स्वेदबर्ग एक ऐसा समकालीन समाजशास्त्री है जिसने आर्थिक समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा इसे वैज्ञानिक रूप से एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में स्थापित करने के लिए भरसक प्रयत्न किये हैं। स्वेदबर्ग सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री वेबर से अभिप्रेरित था। उसने आधुनिक आर्थिक विश्व में बाजार की बदलती संरचनाओं का अध्ययन किया है। उसका मानना है कि बाजार को मुद्रा–विनिमय स्थल मात्र न समझा जाय बल्कि उसे एक सामाजिक रूप में देखा जाय। उसके अनुसार इस क्षेत्र को अपने आकार और अवधारणाओं का विकास स्वयं करना चाहिये। उदाहरण के लिये, वह इस बात पर जोर देता है कि आर्थिक जीवन की सामाजिक व्याख्या की संस्कृति एक महत्वपूर्ण अंग है। वो यह सुझाव देता है कि समाजशास्त्र को संबंधों, लक्ष्यों, मानवीय हस्तक्षेपों तथा मानवीय सार्थकताओं गहरी रूचि लेनी चाहिये जिससे अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को विकसित किया जा सके। अर्थशास्त्र के अमूर्त सिद्धांतों की आलोचना करते समय उसका यह रुझान रहता है कि गरीबी, खपत तथा आर्थिक विकास जैसे विषयों की व्याख्या करते समय उनके भौतिक घटकों पर विशेष जोर दिया जाना चाहिये। अपनी इस समझ के आधार पर स्वेदबर्ग ने रूचि की अवधारणा का विकास किया। बोर्दयू के अनुसंधान कार्य पर विचार करते समय स्वेदबर्ग ने सामाजिक संरचना के लिये रूचि पर विशेष रूप से जोर दिया है, उसने यह भी कहा है कि सामाजिक रूचि, जैविक रूचि तथा मनोवैज्ञानिक रूचि से नितांत भिन्न होती है। पूर्वकाल के समाजशास्त्री पार्सन्स आदि का विचार यह था कि उपयोगितावादी परंपरा के अस्तित्व में रूचियों का विशेष रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दूसरी ओर स्वेदबर्ग सामाजिक रूचि को सामाजिक गतिविधियों तथा सामाजिक स्वरूप के केन्द्र में रखता है। ऐसा करते हुए वह बाजारों, व्यापारिक निकायों तथा व्यापक पूंजीवादी व्यवस्था की गतिशीलता की व्याख्या करता हैं।

गतिविधि 2

अपने नगर के छोर पर लगने वाले ग्रामीण व नगरीय लक्षणों वाले साप्ताहिक बाजार में जाइये और उपभोक्ताओं के व्यवहार का अध्ययन कीजिये तथा उसके आधार पर उनके सौदेबाजी के प्रयासों –पसंद न आने वाली चीजों की अपेक्षा करना तथा अधिक मंहगी चीजों को चुनने से इनकार करने की प्रवृत्ति आदि का केन्द्र में रखते हुए व्याख्या कीजिये।

नगर के प्रमुख भाग में स्थित किसी बड़े माल में जाइये वहां खरीददारों के व्यवहार का अध्ययन कीजिये तथा वे किस प्रकार मोल भाव करते हैं उसको केन्द्र में रखते हुए समाजशास्त्रीय समस्याओं जैसे उपभोक्ताओं के सामाजिक वर्ग, उनकी वेशभूषा तथा हाव–भाव आदि की व्याख्या करते हुए एक पृष्ठ का आलेख तैयार कीजिये जिन दोनों स्थलों पर अपने उपभोक्ताओं तथा उनकी गतिविधियों का अध्ययन किया है उसके आधार पर दोनों बाजार स्थलों तथा उनसे जुड़े संदर्भों में क्या–क्या समानताएं हैं और क्या–क्या असमानतायें है उनकी व्याख्या कीजिये, फिर अपने अध्ययन केन्द्र में अपने साथ छात्रों के साथ इस विषय पर विचार विमर्श कीजिये।

बोध प्रश्न 2

1) कार्ल पोलेनी ने आर्थिक जीवन के सामाजिक तथा सांस्कृतिक आयामों की जो व्याख्या की है, उसका वर्णन कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मार्क ग्रेनोवेटर द्वारा लिखित पुस्तक का नाम बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

3) रिचार्ड स्वेदबर्ग के विचारों की लगभग छः पंक्तियों में व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 आर्थिक जीवन की सामाजिक व सांस्कृतिक निर्भरता : वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य

पार्संस के आदर्श के ठीक विपरीत नये आर्थिक समाजशास्त्र तथा संस्थागत अर्थशास्त्र की वापसी ने नव शास्त्रीय अर्थशास्त्र के विकल्पों के रूप में काम किया है, संपूरकों के रूप में नहीं। बड़े स्तर का समाजशास्त्र जो सामाजिक कार्य–क्षेत्र तथा संस्थागत व्यवस्थाओं के प्रतिच्छेदन पर जोर देता है। यही कारण हे कि आर्थिक समाजशास्त्री इस मामले में रूचि लेते रहे हैं कि बाजार किस प्रकार अपनी वैधानिकता और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करता है जिससे वह अपना निरंतर अस्तित्व बनाये रख सके। नया आर्थिक समाजशास्त्र उद्यमशीलता का अध्ययन स्वतंत्र रूप से छानबीन के माध्यम से करता है नये आर्थिक समाजशास्त्र की प्रकृति सामाजिक व्यक्तिगतवाद की पकड़ से मुक्त होना हैं।

उद्यमशीलता व्यक्ति की सोच के केंद्र में उद्यम का विस्तार करते हुए अधिक पैसा कमाना होता है, अंतः वह अपने आपको उन मनोवैज्ञानिक कमजोरियों से ऊपर उठाने का प्रयास करता है जो उसे भावनाओं के संझावात के लपेटे में ले सकती हैं। आगे बढ़ने का एक रास्ता उद्यमशीलता के सामूहिक गतिविधि के रूप में विश्लेषण करना है। यह नीचे दिये गये तीनों घटकों सम्मिलित करके चलता है –

(i) नेटवर्क सिद्धांत, (ii) संगठनात्मक सिद्धांत (iii) उद्यमशीलता की गतिशीलता का अध्ययन करने वाला सांस्कृतिक समाजशास्त्र। नेटवर्क के अंतर्गत व्यक्ति का व्यवहार

तथा अन्य भूमिकाओं में व्यक्तियों के व्यवहार की समझ शामिल होती है। उसी प्रकार सम्पत्ति के सवाल को इस क्षेत्र में समग्रता के साथ नहीं देखा जाता है।

नया आर्थिक समाजशास्त्र संपत्ति की संरचना की नई अंतर्दृष्टि रखता है – यह अंतर्दृष्टि भारत, चीन तथा ब्राजील जैसे विकासशील देशों में देखी जा सकती है। व्यक्तिगत स्वामित्व में संस्थानों की भागीदारी रहती है और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में यह पद्वति किस प्रकार आकार ग्रहण करती है। थॉमस पिकेटी का शोध 'केपिटल इन टवैंटी फर्स्ट सेंचुरी' (2014) ने समाजशास्त्रियों के सामने विरासत में प्राप्त होने वाली संपत्ति को लेकर नया सवाल उठाया है कि क्या इसके कारण असमानता में पुनरूत्पत्ति नहीं होती? इससे इन देशों में संपत्ति की असमानता के अदृश्य क्षेत्र का द्वार खुलता है। इन देशों की जनसांख्यकीय रूपरेखा इसका प्रबल उदाहरण है। किसको क्या प्राप्त होता है और कैसे को केंद्र में रखने वाले बाजार तथा पूंजीवादकी आर्थिक गतिविधियों के अंतिम परिणामों से आर्थिक समाजशास्त्रियों का कोई सरोकार नहीं है, ऐसा मान लें तो अजीब सा लगता है आर्थिक शक्ति का सीधा संबंध राजनैतिक शक्ति से भी होता है। ये दोनों ताकतें ही जनता की नीतियों को तय करती हैं जिनके आधार पर मनुष्यों की रूचियों तथा उनके व्यवहार आकार ग्रहण करते हैं। इस प्रकार की शक्ति आर्थिक संस्थानों तक आर्थिक मानदंडों को राजनैतिक कार्य–क्षेत्रों, औद्योगिक कार्य क्षेत्रों तथा व्यावसायिक कार्य–क्षेत्रों के माध्यम से संचालित करती है तथा नई नीतियों तथा व्यापारिक रणनीतियों का निश्चयन करती है। दूसरे शब्दों में आर्थिक समाजशास्त्री वास्तविक बाजारों की क्षमता से कहीं ज्यादा उनकी निष्पक्षता को महत्व देते हैं।

पिछले दशको के दौरान यह दृष्टिकोण आधारितता से आगे जाकर कुछ नयी तथा बिल्कुल अलग धारणा अस्तित्व में जाने का प्रयास करता रहा है। उदाहरण के लिए फ्रांस के एक समाजशास्त्री पियरे बोरदयू ने आधारितता के सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है – ''आधारितता की अवधारणा संरचनात्मक घटकों की व्याख्या करने में असमर्थ साबित हुई है''। आर्थिक व्यवहार की प्रकृति को तय करने वाली व्यापक समस्याओं की व्याख्या करने में यह अवधारणा पूरी नाकाफी है।

उदाहरण के लिए कीमतें क्षेत्र की संरचना द्वारा ही तय होती हैं, किसी अन्य तरीके से तय नहीं की जा सकती। 'आर्थिक' आदत की धारणा भी विशेषरूप के सामाजिक मनोवैज्ञानिक आयाम में वृद्धि करती है जो ग्रेनोवेटर तथा अन्य विचारकों के सिद्धांतों में नहीं पाई जाती। (बोरदयू, 2005) आर्थिक व्यक्तिगत उद्यमी भी अपने सामाजिक अनुभवों की ही उपज हैं परन्तु यह सब इस तरह अंतर्निहित है कि इसका 'उन्हें पता ही नहीं लग पाता। क्षेत्र उनकी रूचियों का सृजन करता है, आर्थिक क्षेत्र में उनकी रणनीति तथा दिशानिर्देशन की निर्मित भी करता है। कम्पनियों के शीर्ष पर अथवा राजनैतिक तथा नौकरशाही क्षेत्रों में भी तथा नीति–निर्धारण एवं दिशा निर्देशन करता है। इस प्रकार बोरदयू मौलिक समाजशास्त्री सिद्धांत पद्धति द्वारा शास्त्रीय तर्कसंगत व्यावहारिक कार्य सिद्धांत को चुनौती देता है और इस प्रकार क्रमिक निरीक्षण का मार्ग प्रशस्त करता है। आर्थिक संरचनाएं व्यक्तिगत तथा सामूहिक कार्यों के लिए सुदृढ़ अभिनव रूपरेखाएं हैं, उन्हें विभिन्न ग्रंथियों के बीच अंतसंबंधों के नेटवर्क के रूप में कमतर नहीं किया जा सकता। क्योंकि उनकी जड़ें ऐसे बहुआयामी सामाजिक परिवेशों में गहराई तक स्थित हैं जो विभिन्न प्रकार की पूंजियों के वितरण द्वारा मौलिक रूप से निर्मित हैं। (प्रतीकात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक पूंजियां)।

पूरे आर्थिक खेल में आर्थिक भ्रम के रूप में आर्थिक क्षेत्र में 'अवस्थित' विश्वास (धंधा आखिर धंधा है) एक जटिल ऐतिहासिक उत्पाद है। बोरदयू रूचि की अवधारणा को समस्याग्रस्त रूप में देखता है और अर्थशास्त्रियों में मौजूद अर्थव्यवस्थावाद में रूचि की अवधारणा को विरोधों का पुलिंदा मानता है। उसके अनुसार रूचियां समाज की संरचनाएं हैं। अपने आवास उद्योग पर किए गए शोध 'द सोशल स्ट्रक्चर्स ऑफ द इकॉनोमी' (2005) में उसने इस क्षेत्र में कार्यरत निकायों के बीच तथा व्यक्तियों के लिए किये जाने वाले कामों के बीच होने वाली प्रतिस्पर्धाओं को रेखांकित किया है। बोरदयू ने विभिन्न प्रकार के खरीदारों की आदतों पर सावधानी से अध्ययन किया है तथा 1980 के दशक में मध्यकाल आरंभ करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर उसका सर्वेक्षण किया है। वहाँ बाजार में बेचे जाने वाले आवास ग्रहों को वित्तीय उपक्रम मात्र नहीं मानता है। आवासग्रहों की खरीद–फरोख्त से जुड़े लोग इसमें केवल अपना पैसा ही नहीं लगाते, अपितु अपना समय भी खर्च करते हैं, उन पर काम भी करते हैं और उनकी भावनाएं भी उससे जुड़ी होती हैं। घर वह स्थान हैं जहाँ उनके परिवार के लोग निवास करने वाले हैं। इसलिए घर की खरीदारी में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक घटकों का भी विशेष रूप से महत्व है। घरों के उत्पादन क्षेत्र से जुड़े लोगों के बारे में राष्ट्रीय आंकड़ों तथा अनुकूलन आधारित विश्लेषण की सहायता से आवश्यक जानकारी प्राप्त की जाती है।

ल्यूक बोल्टेंस्की तथा ईव चाइपेलो ने अपने शोध 'द न्यू स्प्रिट ऑफ केपिटेलिज्म' (2005) में राजनैतिक अर्थव्यवस्था के साथ विचारधारा तथा सांस्कृतिक विश्लेषण को सम्मिलित कर नये प्रकार से अध्ययन प्रस्तुत किया है। उसका कहना है कि नव–पूंजीवाद श्रमिक वर्ग के महत्व को पीछे धकेलते हुए किस प्रकार फल–फूल रहा है। लेखकों के अनुसार पूंजीवाद निरंतर रूप बदलता हुआ समाज में अपने लिए महत्वपूर्ण स्थान बनाता जा रहा है। पूंजीवाद के आलोचक व्यवस्था के अंग बनते हुए किस प्रकार कमजोर पड़ते जा रहे हैं। नये प्रतिकारों के सामने आते ही, वे चारों खाने चित हो जाते हैं और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विरोध करने लायक बचते ही नहीं। बोल्टेंस्की और चाइपेलो तर्क देते हैं कि ठेका श्रमिकों की लचीली श्रम–प्रणाली पूंजीवादी प्रणाली को पांव जमाने में मददगार साबित हो रही है। इन लेखकों ने पूंजीवाद की तीसरी 'विचारधारा' 'थर्ड स्प्रिट' द्वारा 1960 और 1990 के बीच के प्रबंधन विवरणों का अध्ययन करके नये प्रकार के पूंजीवाद की खोज की है।

दूसरे शब्दों में उनका शोध–कार्य पूंजीवादी प्रणाली के काम करने के तरीकों को समझने के लिए व्यावहारिक आयाम प्रस्तुत करता है तथा पूंजीवादी प्रणाली पर काम करने वाले वर्ग के विश्वासों व औचित्य को व्यापक कर राजनैतिक अर्थव्यवस्था से जोड़ता है। बोल्टेंस्की ने पूंजीवाद के नेटवर्क के सिद्धांत की प्रकृति को वैचारिक रूप से रूढ़िवादी परन्तु पूंजीवाद का समर्थक बताते हुए उसकी निंदा की है। उसके विचार में यह सिद्धांत मनुष्यों व मशीनों के बीच उन सम्बंधों की स्पष्ट व्याख्या नहीं करता जिनके मौजूद रहते हुए मनुष्य कारखानों तथा व्यापारिक निकायों में काम करते हैं।

आर्थिक समाजशास्त्र में नये विकास के अनेक मामले सामने आये हैं। ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक आर्थिक समाजशास्त्र के अध्ययन के क्षेत्र में नये प्रयासों में बढ़ोतरी हुई है। समाजशास्त्रियों में ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक विषयों के सफल विश्लेषण की परम्परा बहुत लम्बी है। कभी–कभी यह तर्क दिया जाता है कि इन दोनों विषयों पर आर्थिक समाजशास्त्र में अर्थशास्त्र से भी ज्यादा काम हुआ है। आर्थिक समाजशास्त्र आज जिस

स्थिति में हैं, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अब यह अपनी विशिष्ट पहचान के साथ समाजशास्त्र का उपविषय बन चुका है। आज यह एक उपेक्षित विज्ञान नहीं रह गया है, जैसा कि एक पीढ़ी पहले लुइस वर्थ ने कहा था। यह महसूस किया गया कि आर्थिक समाजशास्त्र के लिए यह जरूरी था कि यह अपनी अलग पहचान बनाता जिससे यह मुख्य धारा नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र से हटकर अपना अलग अस्तित्व साबित कर पाता। इतना ही नहीं उसे अर्थशास्त्र की अन्य विचार धाराओं से अलग हटकर भी अपनी पहचान बनानी थी, जैसे सामाजिक अर्थशास्त्र तथा पुराना संस्थानवाद। यह स्पष्ट है कि 1990 तथा उसके बाद के कुछ वर्षों में भी लगातार आर्थिक समाजशास्त्र पर अनेक अध्ययन हुए। जैसे आजकल इस पर काफी अध्ययन हो रहा कि कैसे विविध बाजार वित्तीय समाजशास्त्र के क्षेत्र में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं।

नये आर्थिक समाजशास्त्र ने ऐतिहासिक सामग्री तथा तुलनात्मक विचारधाराओं को व्यापक रूप को एक साथ मिलाने के प्रयास किए हैं। नया आर्थिक समाजशास्त्र व्यापारिक निकायों की संरचना को उजागर करने के लिए करता रहा है तथा निगमों और मध्यवर्ती निकायों के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए संगठनात्मक सिद्धांत का सफलतापूर्वक इस्तेमाल करता रहा है। परन्तु ऐसे अनेक क्षेत्र है जो आर्थिक समाजशास्त्र में आते हैं, और उनकी व्याख्या कम हो पाई है। इनमें से कुछ पर इस इकाई में विचार किया गया है। जैसे – व्यापारिक निकाय, रूचि प्रारूपण, नैतिक अर्थशास्त्र। साथ ही स्तरीकरण के सिद्धांत तथा आर्थिक समाजशास्त्र को एक साथ लाने का प्रयास भी किया गया है। आर्थिक समाजशास्त्रियों ने आर्थिक जीवन में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया है।

आधुनिक आर्थिक व्यवस्था को समझने के लिए आर्थिक समाजशास्त्रियों को धन, मीडिया, आर्थिक विचारधाराओं, संचयन की रणनीतियों, नैतिक व लैंगिक अर्थशास्त्र तथा व्यतिरेकों के स्रोतों आदि का विशेष रूप से अध्ययन करना अपेक्षित है। आर्थिक वास्तविकता की व्याख्या तथा उसके हस्तक्षेप को समझने के लिए दो मौलिक कार्य किये जाने जरूरी हैं। नये आर्थिक समाजशास्त्र को लगातार लचीला रहना पड़ेगा, अपने विश्लेषणों पर ध्यान केंद्रित रखना होगा तथा यह पता लगाना होगा कि मौजूदा आर्थिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को अपने आप में समाहित करने के तरीके क्या–क्या हैं।

3.6 सारांश

'नये आर्थिक समाजशास्त्र' नामक इस इकाई में नये आर्थिक समाजशास्त्र की विशद व्याख्या की गई। समाजशास्त्र के उप विषय आर्थिक समाजशास्त्र के बारे में कार्ल पोलेनी के विचार प्रस्तुत किये गये। मार्क ग्रेनोवेटर की सूचना तथा आधारितता की धारणा का वर्णन किया गया। पॉल डी मैगियो, नील फ्लिंगस्टीन तथा रिचार्ड स्वेदबर्ग के विचारों से अवगत कराया गया।

अंत में आर्थिक जीवन की सामाजिक–सांस्कृतिक आधारितता तथा अन्य अनेक परिप्रेक्ष्यों पर विचार किया गया।

3.7 संदर्भ

ल्यूक बोलटेंस्की एण्ड ईव चाइपेलो (2005). 'द न्यू स्प्रिट ऑफ केपिटेलिज्म, लंदन : वर्सो।

पियरे बोरड्यू (2005). 'द सोशल स्ट्रक्चर ऑफ द इकोनॉमी : पोलिटी प्रैस केम्ब्रिज।

डी मैगियो, पॉल एण्ड हूज लाउच (1998) सोशली एम्बेडिड कस्टमर ट्रांजेक्शन्स : फॉर हाट काइंड्स ऑफ परचेज़िज डू पीपुल मोस्ट ऑफ न यूज नेटवर्क, अमेरिकन सोश्योलॉजिक रिव्यू – 63 : (5), 619–637।

नील फ्लिंगस्टीन एण्ड ल्यूक डॉटर (2007). द सोश्योलॉजी ऑफ मार्केट्स : एन्युअल रिव्यू ऑफ सोहयोलॉजी 33 : 105–128।

नील फ्लिंगस्टीन (1996). मार्केट्स एज पॉलिटिक्स : ए पॉलिटिकल कल्चरल एप्रोचे टू मार्केट इंस्टीट्यूशन्स : अमेरिकन सोश्योलॉजिक रिव्यू 61 (4) : 656–673।

मार्क ग्रेनोवेटर (1985). इकॉनोमिक एक्शन एण्ड सोशल स्ट्रक्चर : द प्रोब्लम ऑफ एम्बेडेडनैस; अमेरिकन जर्नल ऑफ सोश्योलॉजी–91 (3) : 481–510।

जे. नील स्मेल्सर एण्ड रिचार्ड स्वेदबर्ग (2005). द हेंडबुक ऑफ इकॉनोमिक सोश्योलॉजी, सेकेंड एडीशन : न्यू जर्सी : प्रिंसेंटन यूनीवर्सिटी प्रैस।

जे. नील स्मैल्सर एण्ड रिचार्ड स्वेदबर्ग (2005). 'मार्केट्स इन सोसाइटी'. प्रिंसेंटन यूनिवर्सिटी प्रैस।

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आर्थिक समाजशास्त्र विभिन्न समाजों में लोगों के आर्थिक जीवन से संबंधित है। यह बाजार तथा सामाजिक कार्यक्षेत्र का अध्ययन करता है। यह बताता है कि विभिन्न समुदायों तथा संस्कृतियों के सामाजिक जीवन क्या प्रभाव पड़ते हैं।

2) आर्थिक समाजशास्त्र की दुनिया में हाल के वर्षों में नये आर्थिक समाजशास्त्र का उद्भव हुआ है। मार्क ग्रेनोवेटर की आधारितता का अवधारणा के विकास के बाद नया आर्थिक समाजशास्त्र पर्याप्त रूप से चर्चा में आया है। आर्थिक जीवन में गैर आर्थिक घटकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए उसने नये संस्थागत अर्थशास्त्र की नये तरीका से सिलसिलेवार आलोचना की है।

बोध प्रश्न 2

1) कार्ल पोलेनी का विश्वास था कि बाजारों की निर्मित के लिए राज्यों का सहयोग व सहमति जरूरी है तथा पूंजीवादी बाजार अंततः सामाजिक उथल–पुथल उत्पन्न करेंगे। कार्ल पोलेनी यह मानता है कि सरकारों को सामुदायिक हितों के संरक्षण को ध्यान रखते हुए बाजारों में हस्तक्षेप करना चाहिए तथा पूंजीपतियों के समूहों को बाजारों को नियंत्रित करना चाहिए। उसने सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह कही है कि सामाजिक नियंत्रण की निर्भरता से मुक्त होने के बाद आर्थिक प्रक्रम

विनाशकारी हो जाता है। उसका विश्वास था कि पूंजीवाद की वास्तविकता समस्या यह है कि समाज अर्थव्यवस्था को नियंत्रित नहीं करता, अपितु अर्थव्यवस्था समाज को नियंत्रित करती है। पहले अर्थव्यवस्था सामाजिक संबंधों पर आधारित हुआ करती थी, परन्तु अब संबंध अर्थव्यवस्था पर आधारित होने लगे हैं।

2) मार्क ग्रेनोवेटर ने 1985 में – 'इकॉनोमिक एक्शन एण्ड सोशल स्ट्रक्चर : द प्रोब्लम ऑफ एम्बेडेडनैस, अमेरिकन जर्नल ऑफ सोश्योलॉजी 91 (3) : 481–510 शोध प्रबंध तैयार किया था।

3) रिचार्ड स्वेदबर्ग (1948) मेक्स वेबर से प्रभावित था। उसने आधुनिक आर्थिक दुनिया में ऐतिहासिक संदर्भ में बाजारों की संरचनाओं में आने वाले बदलावों का अध्ययन किया था। उसने इस बात पर जोर दिया था कि आर्थिक जीवन के समाजशास्त्र को समझने के लिए संस्कृति का विशेष महत्व है। अतः उसका मानना था कि समाजशास्त्र को संबंधों, लक्ष्यों, मानवीय हस्तक्षेपों तथा अर्थव्यवस्था को अर्थ प्रदान करने में रूचि लेनी चाहिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY